मैं भी पढ़ने जाऊँगा

कमलेंद्र कुमार*

प्यारी मम्मी! सुन लो मेरी
मैं भी पढ़ने जाऊँगा।

रोज सबेरे उठकर दीदी
जल्द तैयार हो जाती।
हलवा, पूड़ी, दही, जलेबी
मम्मी रोज बनाती।
दीदी खाती खूब जलेबी
मुझको थोड़ा देती।
दाँत सड़ेंगे प्यारे गोलू,
मुझको समझा देती।
अगर न मानी बात हमारी
अनसन पर मैं जाऊँगा।
प्यारी मम्मी! दीदी के संग
मैं भी पढ़ने जाऊँगा।।

रोज सबेरे आठ बजे बस
सीटी एक बजाती।
बस्ता लेकर दीदी उस पर
फिर सवार हो जाती।

**प्रधानाध्यापक,* प्राथमिक विद्यालय डगरु का पुरवा, कुठौंद, जालौन, उत्तर प्रदेश 285 128

मैं भी बैठूँ दीदी के संग
और घूम मैं भी आऊँ।
नाचूँ-गाऊँ धूम मचाऊँ
इधर-उधर मैं इठलाऊँ।
अगर न मानी बात हमारी
कुछ भी मैं ना खाऊँगा।
प्यारी मम्मी! सुन लो मेरी
मैं भी पढ़ने जाऊँगा।।

मम्मी! मेरा नाम लिखवा दो
और ड्रेस भी सिलवा दो।
टाई, बेल्ट, किताबें,
और बस्ता भी दिलवा दो।
दिलवा दो मुझको बस मैया
चार कटर, पेंसिल, कॉपी।
चाकलेट का डिब्बा दिलवा दो

बस इतना ही है काफी।
अगर न मेरा नाम लिखाया
बाबा से बतलाऊँगा।
प्यारी मम्मी! सुन लो मेरी
मैं भी पढ़ने जाऊँगा।।